

2686
I

1101
10412

11012

192
Vigna
kilana millis

ॐ नमः शीवन्तु मङ्गात्राय धार्य ॥ ननु विद्वत्किलन-
विधि ॥ मङ्गाथर्थः किव्रनः क्षानधूनधूनकाठ ॥
किवनगाराय ॥ ॥ गीत ॥ यूर्ध्वक्षुषाचल ॥ • ॥ यूर्ध्वव ॥
०० ज्ञानव ॥ ॥ उद्यद्यद्याटय रसर्व इक्षान ईरुट ॥
उक्किलय रसर्वयायान ईरुट ॥ उवउ मूजैल आका

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सर्वे इष्टसकलदा
 दिसयविद्यालान्कियय २६६६६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 अर्कखन ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 यथायदाययुजा ॥ ॥ नीलजलमहावीला ॥ स्वर्गपा
 नं कनकधौ ॥ सर्वे इष्टनिष्टगान्क ॥ अर्कलवीलन

मस्तुन ॥ गहन ॥ गीन ॥ दक्षिण ॥ अष्टम ॥
यीगायत्र ॥ ॐ यद्यद्यादय २ सर्वे इष्टानं हं हट् ॥ ॐ
किं य २ सर्वे या यानं हं हट् ॥ ॐ वज्रमूर्ति ल ॥ आका
दय २ हं हट् ॥ ॐ आः हंः यीगायत्र सर्वे इष्टज
माजालनादि सयत्रिदा लान् किलय २ हं हट् ॥

आकरवन ॥ ॐ यीगायत्राय वज्रयुष्मं यनिष्कृष्टादा ॥ ३ ॥
यं वायदात्रयूजा ॥ ॥ यीन ॥ सदा वीला ॥ स्वजीया
आर्कित्तुही ॥ सर्वे इष्टनिष्कृता नो ॥ यीगायत्र लन्मस्तुः
न ॥ गहन ॥ ॐ निः दक्षिण ॥ अष्टम ॥ ॥ गीन ॥ धन ॥
यच्चिम ॥ नैम ॥ वकायल ॥ ॐ यद्यद्यादय २ ॐ आः हं

वकाचल ॥ सर्वदृष्टवद्विदि ॥ नमः स्यात्तस्य विद्वान्
नकिचर २२ ॥ ॥ अर्कः स्वध ॥ उत्रकाचल २२
दृष्टादा ॥ ३ ॥ यथायदावयूजा ॥ ॥ वकाचवमहा
वीला ॥ स्वगयासाकनजुष्टी ॥ सर्वदृष्टनिदुक्त ॥ वकाच
नमस्तुते ॥ ॥ गत्यन ॥ गान ॥ धन ॥ उक्त ॥ वायुय ॥

श्रामाचल ॥ उद्यद्यद्यद्वर ॥ उत्राः २२ ॥ श्रामाचल
सर्वदृष्टज्जाधियय नीलस्य विद्वान् नकिचर २
दृष्ट ॥ ॥ अर्कः स्वध ॥ उत्रकाचल २२
यनिदुक्त ॥ ३ ॥ यथायदावयूजा ॥ ॥ श्रामाचल
महावी ॥ स्वगयासाकनजुष्टी ॥ सर्वदृष्टनिदुक्तान्

[illegible]

ह्येगावलमहावीला ॥ रवेऽयं जगत्कनकधी ॥ सर्वे इष्ट
 निकृष्टान् ॥ ह्येगावलं नमस्तुते ॥ ॥ गत्यन ॥ ॥
 धन ॥ अत्रायन ॥ दक्षिणायनाय नमः ॥ ॥ भाष्य-
 द्वादिदद्युक्तव्यवृष्टिः ॥ सिंहाद्विषाद्विकं ॥ कथा-
 तयद्विषाद्विः ॥ जगत्कनकधी ॥ रवेऽयं जगत्कनकधी ॥ नमः ॥

वेदभय निमल गङ्गा ॥ इहानिमात्रादयः ॥ श्रीशंभुय
निकीलरानुज गङ्गा ॥ विद्यायामनोकेके ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
थन ॥ मधुप्रसा ॥ मधुप्रसा ॥ यथाकिह ॥ थायः
नायार ॥ थन ॥ वसुधैवा कुरुते ॥ गीत ॥ वरुवव
सुधैवा ॥ ॥ थनवि ॥ मजान ॥ थं ॥ उथं ॥ ॥ ॥

॥ उदस किं वध्य ॥ विश्वनाथविश्वयापि ॥ वसुधैवा कुरुते
रुवचनुमान ॥ विद्युविधैस निदेव ॥ मूत्र ॥ उदस नमसु
ते ॥ ॥ श्रीकाशामुख्यादी ॥ ॥ ॥ ॥
॥ गतसपूजा ॥ ॥ गतपतिवनमस्यामि ॥ एकदने
गजाननं ॥ स्वतवधुनमस्यामि ॥ वसुधैवा कुरुते
ते ॥ मद्यया ॥ उदो ॥ ॥ ॥ ॥ गतपतिविद्यु

नासाय हं रुद्र ॥ धृत् ॥ गद्यपत्नी स्वनव धुम् ॥ अत्र
नतर ॥ हं रुद्र स्वाहा ॥ धृत् ॥ स्वरुद्रु द्वा ॥ मूषकै ग
द्यपत्नी रुद्रा नः कृत्रिव कृष्ट सूर्यय ह्यय विनी-
च रुद्रु जं ॥ स वयसां हि रुद्र रुद्र के वामा त्या मल के
दधन ॥ विद्युत्ता ज विरा व ॥ अकषत ॥

उं गं गद्यपत्नी स्वाहा ॥ गद्यपत्नी स्वाहा ॥ उं ग
द्यपत्नी स्वाहा ॥ उं गद्यपत्नी स्वाहा ॥ उं ग
द्यपत्नी स्वाहा ॥ यज्ञा रुद्रि ॥ नि आदि त्या
वरा साय विद्या च न दाय न ॥ ला कार्थ सिद्धि दा न
य ॥ गद्यपत्नी नम रुद्र ॥ वनी ॥ नमा म न क काय

वाकवि नमो वज्र कोषाय महोत्तमैक नरे न
वाय ॥ अग्निमस्रयत्र सुपा नष्ट हो न ह नाय

ॐ नमो वज्राय ॥ सुफलाज कृमाह ॥ गुरुमदलदिगुत्रि ॥
कंसुपुजा ॥ अग्निधायन ॥ धूनकाठ ॥ काकवत्रि ॥ करव
जाविय ॥ धनरुनाद्रि ॥ धनरी ॥ अक्रिसिन्धु ॥ क
सिन्धुसुत्रि ॥ अत्रि ॥ अत्रि ॥ अत्रि ॥ अत्रि ॥ अत्रि ॥
सुत्रादेवने ॥ कंसुवत्रा सुनयावयं चामिन नसिन्धु ॥ सुत्रा

नय्यात्रनिधत्रखरायक ॥ थकायात्र ॥ सिद्धत्रखरास
नय ॥ यद्यगयनमित्र ॥ संखलखनसि ॥ थनत्रीअथि
थयनयादात्र ॥ नत्रनलियाय ॥ कायका ॥ नूननाय
त्रदवाकद ॥ थुनिकासं ॥ कायइत्र ॥ थनेजायमम
इगगयायादहनहन ॥ काय ॥ उवैयापाविश्वधन
हनकाय ॥ उसर्वकमावत्रनानिरमिक्रनहन
उविनयावत्रनालिहन ॥ उहंविश्वधमावत्र
नालिहन ॥ ० ॥ उकत्ररधकरहनरआवत्रना

निहन ॥ उहंसलरयसत्ररआवत्रनानिहन ॥
उहनसर्ववनानिहन ॥ उहनसर्ववत्रना
लिहनयहन ॥ उहनसवावलनालिहन ॥ ० ॥
उगानसर्ववत्रनालिहन ॥ उकिदरसर्ववनालि
हन ॥ उदहनसवावत्रननत्रकगानिहनहन ॥
उयवरसर्वयनगानिहनहन ॥ उमथरनिहनकहन
नहनहन ॥ थुनिगोत्रनयाय ॥ धनडात्रसि ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो

१५ तमः प्रवक्तृ सत्वाय १५ वृद्ध



२ राग सावन ॥ ५ क व ड न ॥ १ ल स क ॥ ७ रा न क ना ॥ च न
रु ज ख ग य स क स ल ध नू धा ॥ न मा मि शी म ऊ र शी
य स न न श्य रा ॥ द हि न ग ध य नि ॥ वा म शी म ला का न ॥
स ग न म शु न मा अ य क रि न सि ना ॥ ५ ॥ शि नि स ला न
ना या ॥ वि श्व व्या यि ना २ अ न म ला र य व रु व्या धि द रि
न रु न ना ॥ ५ ॥ वृ ज ध न य स ॥ त्रि न ॥ दा म र न यि मा ॥
गु न च न न मा नू रि धि ॥ व न य म दा ॥ ५ ॥

हाम विष्णुः जह माहा गौबल

१३ नभा वृत्तार ॥

आशा नमः काशि
2686 I
SHRI ARCHIVES

मम

क

१३ नभा वृत्तय ॥

आभा नमः कथि

2686

151

INDIA ARCHIVES

ॐ नमः श्री हामयूजा विधि ॥ धनत्रि ॥ सूर्यार्घ्य ॥ यूजा ॥
हवजाय ॥ गुग्गुलु ॥ दशुग्रीव ॥ कवस
नास ॥ वंदे न्यास ॥ पंचक्षत्रायूजा ॥ धूमि धून
काव ॥ ऊहालंहरय ॥ यथदुमि ॥ मधुलह्व
नादुमि ॥ धूनकाव ॥ दवयूजा ॥ वूप ॥ जाय

नवाजन ॥ बाह्यनगपन ॥ कृष्णमूलावक्र
भूवागनस ॥ शिव ॥ वीवा ॥ नृगववा ॥ स
वा ॥ गववा ॥ हि ॥ ऊजमान ॥ वकिमरुयके ॥
वसायावरुय ॥ धन ॥ मन ॥ रु ॥ गावा ॥ सरुन
वंशव ॥ धयावरुय ॥ स्वमिवाक् ॥ दिगवती ॥

महावत्रिः वृत्रक महावत्रिः ॥ ॥ धनः जिवसाध
याय ॥ ॐ आः स्वस्त्यस्तु ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु
य ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु
थस्त्य ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु

वैश्वानराय ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु
स्वस्त्यस्तु ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु
यन ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु
वस्त्यस्तु ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु ॥ ॐ स्वास्त्यस्तु

नयि॥क्ष॥दूमात्रीकानयि॥क्ष॥पंचरसूत्रका
नयि॥क्ष॥जायखाननगर॥पंचायकात्रयूजा॥
ऊधमा॥धन॥त्रिवंजुमान॥पंचरसूत्रका
नशायकात्र॥जायशाय॥धन॥मित्रस॥पंचा
दूसकाय॥मित्रस॥दक्षनागर॥ऊधमान॥

मित्र॥खानन॥क्ष॥धन॥पंचरसूत्रका॥जायका
सुक्रियाय॥स॥क्ष॥पंचगवविय॥भूय
जाय॥पंचायकात्रयूजा॥धन॥ऊधन॥मित्र
वदन॥कनय॥भूयादिकाकयाडाव॥भूय॥
दानयनऊधमान॥भूयात्रात्रात्र॥साकार

लसंयायक कामार्थः सर्वो विद्यायुगां न्यर्थः सश्वा
 यद कामावनं ग्रहदाषापमिह्यं सः शान्तिव
 धनुमसदा ॥ गुत्रलं द्वाय ॥ स्त्रीसु व्याकन ॥
 दानयऊऊमानस्यः आरूयात्रा ग्य कामार्थः श
 क्तानि निखिलसंयायक कामार्थः यवसंकत्यः

जिवाद्गिउरूयूजानिमिनिर्थं ॥ जिवाद्गि ॥
 गृह्ण १२३४५६७८९१० ॥ जिवा ॥ वाह ॥ गुमि ॥ दा
 य ॥ धन ॥ पंचायतवाग्ययूजा ॥ धन ॥ पंचवक्त्रवा
 दायक ॥ गीत ॥ कावशि ॥ धन ॥ नृगवथा ॥ भ
 था ॥ आद्गि विरय ॥ धन ॥ स्वाङ्क ॥ आद्गि विरय ॥

॥ निष्ठा ॥ गुग्गुलुमधुलदनक ॥ विसृज्य ॥ नमोऽन ॥
मगद ॥ नमोऽन ॥ सव्यन ॥ सिद्ध ॥ सिद्धाद् ॥
नि ॥ ऊऊमान ॥ यूष्ण ॥ ऊऊपक ॥ यूष्ण ॥ थन
वगुमादावाजायाग ॥ आद निविय ॥ थन ॥ मूव
यूष्णयाग ॥ दगुववीविय ॥ स्नानत ॥ ध ॥ गुग्गुलु ॥

कृमायन ॥ ॐ ॥ ॥ थन ॥ चवयूनि ॥ द
खकडात ॥ वायूक ॥ आय ॥ चयूयूजायाग ॥
मादिनं ॥ शु रु दं हामं ॥ चटकदववाऊक
अनक ॥ अरुवगमि ॥ दिव्यनिश्चिगं ॥ ॥
दुवन्दक ॥ वाया ॥ चवयूनि ॥ दिनाखयाव ॥ श्ववा

ॐ कोमात्रीया ल्पुल्ले ॥ निवाद्रुतिउहू या न ध
 काव ॥ अनावदहाव ॥ दवया ॥ अ ॥ ॐ ॥
 याक दहाव ॥ कवद्रुति ॥ थपूयनियान ॥ म
 वगुआसिकाइहावदा ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥
 दिनाया नावके ॥ मरु ॥ नागवा आ मूयासहे

ॐ दिगं निवक्षमं वगत्तानि श्यप्रिर्नंगनः ॥
 ॥ ॐ मरु ॥ या नावसदहाव ॥ नागवा आ
 या ॥ वाव कोमात्रीया ल्पुल्ले ॥ निवाद्रुतिउ
 हू या न ध काव ॥ या नावसदहाव ॥ नागवा
 जायाक कवद्रुव ॥ थ ॐ नमः यनियान

श्री

मंगल गुरी ॥ अहि का क दाव वा ॥

ॐ नमः श्री वर स त्वाय ॥ १ ॥ पितृ क्रिया माह ॥ २ ॥
आ ग र्थं अ प ना धू न का उ प ॥ ३ ॥ श्री सु र्था
द या य ॥ नौ या य के ॥ आ च म नं प्र ती क र्था
ह ॥ ४ ॥ सी द्वा लं व र्णी दे व या त तिकं व र्णी र्ज
मा नं ती य ॥ ५ ॥ सु व र्ण ती ल क वि भू ष नं सि न
सी च न्द्र नं द नं ॥ ६ ॥ आ त ॥ ७ ॥ स्या ज्ञ की त

Handwritten text in Devanagari script, likely a religious or philosophical treatise. The text is arranged in five horizontal lines across the top page of the manuscript.

Handwritten text in Devanagari script, continuing the text from the top page. The text is arranged in five horizontal lines across the bottom page of the manuscript.



Handwritten text in Devanagari script, likely a religious or philosophical passage. The text is written in a cursive style and is somewhat faded. It appears to be a single paragraph or a short section of a larger text.

Handwritten text in Devanagari script, continuing the passage from the top section. The text is also in a cursive style and is somewhat faded. It appears to be a single paragraph or a short section of a larger text.

...
...
...
...
...
...

...
...
...
...
...
...

